

सूखी धरती को कितना उलीचें

किसानों को इस बात के लिए प्रोत्साहित करना कि वे खेती की ऐसी नई तकनीकें ईजाद करें और अपनाएं जिनसे धरती की लगातार बढ़ रही पानी की समस्या को हल करने



में मदद मिल सके, स्वाभाविक ही है। इसके लिए सरकार मदद भी करती है और करना भी चाहिए। लेकिन ज़रूरी नहीं कि नई तकनीक हमेशा पुरानी से बेहतर हो। यह बात दक्षिण-पश्चिम अमेरिका के सूखे क्षेत्रों में फसलों पर किए गए एक अध्ययन के दौरान सामने आई।

ड्रिप सिंचाई एक ऐसी तकनीक है जिसमें पानी को सीधा पौधों की जड़ों में पहुंचाया जाता है। अतः पूरे खेत को पानी से भरकर सिंचाई करने की तुलना में ड्रिप तकनीक में लगभग आधे पानी की ज़रूरत होगी। फिर भी न्यू मैक्सिको स्टेट यूनिवर्सिटी के फ्रैंक वार्ड का मानना है कि यदि सभी किसान इस नई तकनीक को अपना लेते हैं तो हम पर्यावरण से जितना पानी अभी लेते हैं उससे काफी अधिक लेंगे। वार्ड ने सारे अध्ययन अमेरिका-मैक्सिको की सीमा पर स्थित ऊपरी रिओ ग्रैनेड बेसिन पर किए और पता लगाया कि जब किसान ड्रिप सिंचाई अपनाएंगे तो क्या होगा। नई तकनीक फसल की पैदावार तो बढ़ाती है मगर बढ़ती पैदावार के लिए लगातार ज़मीन से ज़्यादा पानी निकालकर हवा में छोड़ दिया जाता है।

इससे पहले खेत को पानी से भरकर सिंचाई की पद्धति में उपयोग में लाया गया पानी बरबाद नहीं जाता था, जैसा कि दावा किया जाता है। वार्ड कहते हैं कि वह पानी या तो कुछ चट्टानों द्वारा धारित कर लिया जाता था अथवा भूजल में समा जाता था।

उनका मॉडल यह भी दर्शाता है कि अगर किसानों को ड्रिप सिंचाई अपनाने के लिए सब्सिडी दी जाए तो रिओ ग्रैनेड बेसिन में पानी की 20 प्रतिशत अतिरिक्त बरबादी होगी।

लेकिन इस बात से सभी लोग सहमत नहीं हैं। ओकलैण्ड, कैलीफोर्निया के एक स्वतंत्र अनुसंधान केन्द्र पैसिफिक इंस्टीट्यूट के पीटर ग्लिक कहते हैं कि वार्ड का यह सोचना गलत है कि खेत में भरे पानी का पुनः उपयोग हो जाता है। इसमें से कुछ तो भाप बनकर उड़ जाता है जबकि कुछ अनुपयोगी नमकीन भूजल में समा जाता है। ग्लिक सोचते हैं कि सबसे अच्छा मॉडल वह होगा जो कम-से-कम पानी के उपयोग पर अधिकतम पैदावार दे सके। हमें किसी ऐसे मॉडल की तलाश करनी चाहिए। (स्रोत फीचर्स)